प्रतिबंधित संचलन

खंड–4 अंक–135 दिनांक–24/05/2019

के. रि. पु. बल ई–संवाद सेवा एवं निष्ठा

झारखंड में रक्तदान कैंप

सरोकार

प्रभात खबर

रांची, झारखंड

15.05.2019 | 04

राजधानी के ब्लड बैंकों में खून की कमी, लोग भी जागरूक नहीं

खून चाहिए, तो दान करना पड़ेगा

2500 यूनिट रक्तदान करते हैं हर साल सीआरपीएफ के जवान

रक्तदान करने में सीआरपीएफ के जवानों की संख्या सबसे ज्यादा है. साल में तीन से चार बार रक्तदान शिविर आयोजित कर सीआरपीएफ के जवान करीब 2500 यूनिट रक्तदान करते हैं. वहीं झारखंड पुलिस अनुसार के जवान भी रक्तदान करने में पीछे नहीं हैं. एक साल में वह भी शिविर के माध्यम से 700 से 800 यूनिट तक खून का दान करते हैं.

इनसान की रगों में दौड़नेवाले खून को किसी लैब में तैयार नहीं किया जा सकता है. अगर किसी व्यक्ति को अस्पताल में खून जरूरत होती है, तो उसकी पूर्ति कोई दूसरा व्यक्ति रक्त देकर ही कर सकता है. सरकार दावे अपने ही करती है कि झारखंड को हर साल तीन लाख 90 हजार यूनिट खून की जरूरत पड़ती है, लेकिन हम इस लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं. राजधानी राँची में राज्य के सबसे बड़े अस्पताल रिम्स के अलावा कई बड़े निजी अस्पताल भी हैं, जहां पूरे राज्य से इलाज के लिए मरीज पहुंचते हैं. ऐसे में यहां खून की खपत ज्यादा होना लाजिमी है, लेकिन जरूरत के हिसाब से यहां खून उपलब्ध नहीं हो पाता है. कई बार, तो ब्लड बैंक में कुछ ब्लड ग्रुप का यूनिट शून्य तक पहुंच जाता है. खून के लिए लोग दर–दर भटकते हैं. जाहिर है कि राज्य के लोगों में रक्तदान को लेकर जागरूकता का अभाव है. इस समस्या का मात्र एक ही समाधान है, खून चाहिए, तो दान करना पड़ेगा ...

3,50,000
यूनिट रक्त की जरूरत है जनसंख्या के हिसाब से झारखंड में हर साल

1,90,000
यूनिट खून ही जमा हो पाता था वर्ष 2017–18 में आंकड़ों के मुताबिक

2,24,000
यूनिट रक्त एकत्र हुआ वर्ष 2018–19 में, पिछले साल से 34 हजार यूनिट ज्यादा

झारखंड में खून की जितनी डिमांड है, उसके अनुसार उपलब्धता काफी कम

अस्पतालों को लगाना है रक्तदान शिविर, लेकिन निर्देश का नहीं करते पालन

कई बार निजी अस्पतालों को आयोजन पत्र भी जारी कर चुके हैं शिविर संचालन

अन्य जिलों के मुताबिक रांची के अस्पतालों पिलेरा कर रिम्स पर दबाव ज्यादा

रक्तदान

सीआरपीएफ द्वारा अपसर कैंप लगाया जाता है, जिसमें जवान रक्तदान करते हैं.

परेशानी

रिम्स के ब्लड बैंक पर पहली लोड. यहां हमेशा खून लेनेवालों की भीड़ दिखती है.

जरूरत

रिम्स के ब्लड बैंक में जरूरतमंद लोग रक्तदान कर बदले में खून लेते हैं.

आनंद पसारी के जज्बे को सलाम, 119 बार कर चुके हैं रक्तदान

रांची के लालेन्द्रा सिंह अनंद पसारी रक्तदानवीर के रूप में हैं. अनंद पसारी ने अबतक 119 बार रक्तदान कर चुके हैं. उनका कहना है कि रक्तदान करने की प्रेरणा किसी एक व्यक्ति विशेष से नहीं मिली. वह रक्तदान करने की प्रेरणा हर उस व्यक्ति से मिली, जो अपने परिवार के किसी सदस्य के लिए रक्त की तलाश में इधर–उधर भटकता है. उन्होंने बताया कि उन्हें पहली बार अपनी फुफेरी बहन के लिए रक्त की जरूरत पड़ी थी. उसके बाद से वह लगातार रक्तदान कर रहे हैं. उनका कहना है कि हमारे शरीर में जो रक्त है, वह किसी के काम आ सके, इससे बड़ा पुण्य का काम और क्या हो सकता है. उन्होंने बताया कि वह अबतक 119 बार रक्तदान कर चुके हैं. उनका कहना है कि हमें रक्तदान को लेकर लोगों में जागरूकता लानी चाहिए.

रक्तदान में राज्य के पुरुष आगे, रांची में महिलाएं

राज्य के पुरुष रक्तदाताओं की संख्या ज्यादा है. वर्ष 2018–19 तक 1 लाख 75,696 यूनिट खून इकट्ठा किया गया. इनमें 72,129 यूनिट रक्तदान महिला ने. लेकिन महिला रक्तदाताओं की संख्या 3,260 ही रही. इसमें सबसे ज्यादा महिला रक्तदाता रांची से आयी हैं. वर्ष 2018–19 में रांची में अबतक विभिन्न शिविरों में 1408 महिलाओं ने रक्तदान किया.

संत जेवियर व बीआइटी के विद्यार्थी रक्तदान में आगे

राजधानी में कुछ शिक्षण संस्थान भी रक्तदान करने में आगे हैं. संत जेवियर कॉलेज रांची और बीआइटी मेसरा भी ऐसे दो शिक्षण संस्थानों में शामिल हैं. बीआइटी मेसरा के विद्यार्थी हर साल दो बार यूनिट रक्तदान करते हैं. वहीं, संत जेवियर कॉलेज के विद्यार्थी हर साल में करीब 150 से अधिक यूनिट रक्तदान करते हैं. वहीं, संत जेवियर कॉलेज के विद्यार्थी साल में 250 से अधिक यूनिट रक्तदान करते हैं. वहीं, झारखंड अल्पसंख्यक आयोग की अध्यक्ष नाहिद इमाम ने भी अपने जन्मदिन के अवसर पर रक्तदान किया था.

रिम्स ब्लड बैंक ने एक साल में एकत्र किया 28,304 यूनिट

रिम्स के ब्लड बैंक में एक साल में करीब 28,304 यूनिट खून एकत्र किया गया. वर्ष 2018–19 में 28,304 यूनिट खून एकत्र किया गया. वहीं, मेडिकल कॉलेज व अस्पताल में 10,221 यूनिट खून एकत्र हुआ. वहीं, सदर ब्लड बैंक में 5560 यूनिट खून एकत्र किया गया.

क्या कहते हैं आंकड़ा

रक्तदान करना मेडिकल छात्र होने के नाते पुण्य का काम है. मेडिकल लोग लगातार ब्लड डोनेट करते रहते हैं. लगभग हर साल रक्तदान करने में आगे हैं. हमारा यह प्रयास रहता है कि ब्लड की कमी किसी भी मरीज को न हो. अक्सर लोगों को रक्तदान करने में डर लगता है. लेकिन ऐसा कुछ नहीं होता है. रक्तदान करने से शरीर में कोई कमजोरी नहीं आती है. उसे हर व्यक्ति को रक्तदान करना चाहिए.

डिब्रिटो लोग अपने अंग रक्तदान के लिए अपने अंग नहीं दे सकते. पुण्य संस्था व ब्लड लोन सोसाइटी, ऑफ इंडिया मुंबई विंग ऐसा संगठन है, जहां लोग अपने अंग रक्तदान करने का संकल्प लेते हैं. खून व्यक्ति से व्यक्ति में ही जाता है. खून इनसान से ही लेना पड़ता है. रक्तदान महादान है. हर व्यक्ति को रक्तदान करना चाहिए.

राजधानी में तीन संगठन जो आयोजित करते हैं कैंप

राजधानी में तीन संगठन रक्तदान शिविर आयोजित कराने में सबसे सक्रिय भूमिका निभाते हैं. लायंस क्लब्स, झारखंड दिव्यांग मेडिकल कल्याण और वेलफेयर सोसाइटी और सर्विस इंस्पायर सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में हर साल 2 अक्टूबर को रांची में रक्तदान शिविर आयोजित करती रही है.

जमशेदपुर से पूरे राज्य को सीखने की जरूरत

रक्तदान के मामले में जमशेदपुर राज्य के अन्य जिलों से काफी आगे है. जमशेदपुर के लिए अच्छी खबर यह है कि टीएमएच और एमजीएम ब्लड बैंक में रक्तदाताओं की संख्या पूरे राज्य में सबसे ज्यादा है. टीएमएच ब्लड बैंक में वर्ष 2018–19 में 20,444 यूनिट और एमजीएम ब्लड बैंक में 10,000 यूनिट ब्लड एकत्र किया गया है. इसके अलावा टाटा मुख्य अस्पताल में वर्ष 2018–19 में 3,057 यूनिट ब्लड एकत्र किया गया है.

जमशेदपुर में 39,401 रक्तदाताओं ने दिया खून

जमशेदपुर ब्लड बैंक में वर्ष 2018–19 में 52,016 यूनिट खून एकत्र हुआ. जिसमें से 39401 यूनिट खून ब्लड डोनेशन कैंप के माध्यम से एकत्र किया गया. खून एकत्रकर्ताओं में 28,444 पुरुष और 1057 महिला शामिल हैं. जमशेदपुर ब्लड एसोसिएशन ब्लड बैंक में वर्ष 2018–19 में 12,000 यूनिट खून एकत्र किया गया. यहां सबसे ज्यादा रक्तदान शिविर आयोजित कर रक्त एकत्र किया जाता है.

17 मई 2019 को पूरे झारखंड में सीआरपीएफ अधिकारियों और जवानों द्वारा रक्तदान किया गया।